IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में National Digital Library (NDL) की उपयोगिता का अध्ययन

A Study on the Utility of the National Digital Library (NDL) in India

Author : Jeetu Sharma, Guest Feculty In library science, Govind Guru Tribal University, Banswara (Raj.)

Abstract : वर्तमान डिजिटल युग में शिक्षा, अनुसंधान एवं ज्ञान के प्रसार में डिजिटल पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। भारत में National Digital Library of India (NDLI) इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पहल है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधार्थियों तथा आजीवन सीखने वाले लोगों को विभिन्न विषयों से संबंधित गुणवत्तापूर्ण डिजिटल शैक्षणिक संसाधनों तक सरल, त्वरित और व्यापक पहुँच प्रदान करना है। NDLI को भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत National Mission on Education through Information and Communication Technology (NMEICT) के माध्यम से विकसित किया गया तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर (IIT Kharagpur) द्वारा इसका विकास एवं संचालन किया गया। इसका राष्ट्रीय स्तर पर शुभारंभ 19 जून 2018 को हुआ। National Digital Library का मूल उद्देश्य विभिन्न संस्थानों एवं डिजिटल रिपॉजिटरी में उपलब्ध ज्ञान-संसाधनों को एकीकृत करके एक सिंगल-विंडो खोज मंच उपलब्ध कराना है। इसके माध्यम से उपयोगकर्ता एक ही स्थान पर पुस्तकों, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों, व्याख्यानों, ऑडियो-बुक्स, वीडियो, शिक्षण सामग्री, प्रश्न-पत्रों, सिमुलेशन तथा अन्य डिजिटल संसाधनों को खोज सकते हैं। इसकी फिल्टरयुक्त एवं फेडरेटेड सर्च व्यवस्था उपयोगकर्ताओं को विषय, स्रोत, सामग्री के प्रकार तथा अन्य मानकों के आधार पर आवश्यक सामग्री तक अपेक्षाकृत कम समय में पहुँचने में सहायता करती है। NDLI की उपयोगिता विशेष रूप से शिक्षा के सार्वभौमीकरण के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में प्रत्येक विद्यार्थी के लिए समान स्तर की पुस्तकालय सुविधाएँ उपलब्ध कराना चुनौतीपूर्ण है। डिजिटल पुस्तकालय इस भौगोलिक असमानता को कम करने में सहायक है। ग्रामीण क्षेत्रों, छोटे शहरों तथा ऐसे संस्थानों के विद्यार्थियों को भी इंटरनेट के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाली अध्ययन सामग्री प्राप्त करने का अवसर मिलता है। इस प्रकार NDLI शिक्षा में पहुँच, समानता और गुणवत्ता को बढ़ावा देने में सहायक बनता है। उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में भी NDLI की उपयोगिता व्यापक है। शोधार्थियों को साहित्य समीक्षा, विषय चयन, पूर्ववर्ती शोध के अध्ययन तथा संदर्भ सामग्री प्राप्त करने में डिजिटल संसाधनों का विशेष लाभ मिलता है। विभिन्न विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों और अन्य रिपॉजिटरी से संसाधनों को एकीकृत करने के कारण शोधार्थियों को बहुविषयक एवं अंतर्विषयक सामग्री खोजने का अवसर मिलता है। इससे शोध कार्य की गति बढ़ती है और शोधार्थियों के लिए व्यापक ज्ञान आधार तैयार होता है। NDLI की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता इसकी बहुभाषिक एवं बहुस्तरीय प्रकृति है। यह विभिन्न भारतीय भाषाओं में सामग्री एवं खोज सुविधाओं को उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य करता है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार इसका वेब पोर्टल और मोबाइल एप अनेक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है।

Keywords : राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय, National Digital Library of India (NDLI), डिजिटल पुस्तकालय, डिजिटल शिक्षा, ई-लर्निंग, ऑनलाइन अध्ययन, शैक्षिक संसाधन, ज्ञान संसाधन, सूचना प्रौद्योगिकी, डिजिटल साक्षरता,

उच्च शिक्षा, शोध एवं अनुसंधान, ई-पुस्तकें, ई-जर्नल, शोध-प्रबंध, शैक्षणिक सामग्री, ज्ञान का लोकतंत्रीकरण, शिक्षा की पहुँच, बहुभाषिकता, डिजिटल समावेशन, ऑनलाइन ज्ञान, विद्यार्थी, शिक्षक, शोधार्थी, आजीवन अधिगम।

Article : इक्कीसवीं सदी को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का युग कहा जाता है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, कंप्यूटर तथा डिजिटल माध्यमों के विस्तार ने शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करने के पारंपरिक तरीकों में व्यापक परिवर्तन किया है। पहले विद्यार्थियों और शोधार्थियों को अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए भौतिक पुस्तकालयों पर निर्भर रहना पड़ता था, जबकि आज डिजिटल पुस्तकालयों के माध्यम से किसी भी स्थान से विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक एवं शोध सामग्री प्राप्त की जा सकती है। भारत में इसी परिवर्तन को गति प्रदान करने वाली महत्वपूर्ण पहल **National Digital Library of India (NDLI)** है। यह भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रायोजित तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर)IIT Kharagpur) द्वारा विकसित और संचालित डिजिटल ज्ञान मंच है। इसका राष्ट्रीय स्तर पर शुभारंभ 19 जून 2018 को किया गया था। National Digital Library का उद्देश्य देश के विभिन्न डिजिटल ज्ञान-संसाधनों को एकीकृत करके विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधार्थियों और सामान्य शिक्षार्थियों को एक ही मंच पर उपलब्ध कराना है। यह केवल डिजिटल पुस्तकों का संग्रह नहीं है, बल्कि विभिन्न संस्थानों के डिजिटल संसाधनों को खोजने और उन तक पहुँचने के लिए एक एकीकृत एवं एकल-विंडो मंच के रूप में कार्य करता है। NDLI की वेबसाइट के अनुसार इसका लक्ष्य शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार और ज्ञान के लिए राष्ट्रीय ज्ञान-संपदा के रूप में विकसित होना है।

National Digital Library की अवधारणा एवं विकास

भारत में डिजिटल पुस्तकालय की आवश्यकता मुख्य रूप से शिक्षा में समान अवसर, ज्ञान-संसाधनों की व्यापक उपलब्धता और डिजिटल तकनीक के प्रभावी उपयोग से जुड़ी हुई है। National Mission on Education through Information and Communication Technology (NMEICT) के अंतर्गत अप्रैल 2015 में NDLI की पायलट परियोजना शुरू की गई। बाद में इसका विस्तार किया गया और 19 जून 2018 को इसे राष्ट्रीय स्तर पर समर्पित किया गया। IIT खड़गपुर को इस परियोजना के विकास एवं समन्वय की जिम्मेदारी दी गई। NDLI की विशेषता यह है कि यह विभिन्न संस्थानों और रिपॉजिटरी में उपलब्ध सामग्री के मेटाडेटा को एकत्र करके उपयोगकर्ता को एक स्थान से खोज की सुविधा देता है। इस प्रकार उपयोगकर्ता को अलग-अलग डिजिटल पुस्तकालयों में जाकर बार-बार खोज करने की आवश्यकता कम हो जाती है। इसकी फिल्टरयुक्त और फेडरेटेड सर्च व्यवस्था उपयोगकर्ता को विषय, सामग्री और अन्य मानकों के आधार पर अपेक्षित संसाधन खोजने में सहायता करती है।

शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगिता

National Digital Library की सबसे महत्वपूर्ण उपयोगिता शिक्षा के क्षेत्र में दिखाई देती है। विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के लिए विभिन्न प्रकार की डिजिटल सामग्री खोज सकते हैं। पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त लेख, व्याख्यान, वीडियो, ऑडियो, प्रश्न-पत्र और अन्य शिक्षण संसाधन भी डिजिटल माध्यम से खोजे जा सकते हैं। इससे विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम से संबंधित अतिरिक्त सामग्री प्राप्त करने में सहायता मिलती है। पारंपरिक पुस्तकालयों में पुस्तकों की संख्या सीमित हो सकती है तथा किसी विशेष पुस्तक के लिए विद्यार्थियों को प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है। डिजिटल पुस्तकालय इस समस्या को काफी हद तक कम करता है। इंटरनेट उपलब्ध होने पर विद्यार्थी घर, कॉलेज, छात्रावास अथवा किसी अन्य स्थान से अध्ययन सामग्री खोज सकता है। इस प्रकार NDLI शिक्षा को अधिक **लचीला, सुविधाजनक और स्थान-स्वतंत्र** बनाता है।

उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान में योगदान

उच्च शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में NDLI की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शोधार्थियों को किसी भी विषय पर शोध करने के लिए बड़ी मात्रा में साहित्य, शोध-पत्र, शोध-प्रबंध और अन्य अकादमिक सामग्री की आवश्यकता होती है। NDLI विभिन्न स्रोतों की सामग्री को एकीकृत खोज सुविधा के माध्यम से उपलब्ध कराने में सहायता करता है। इससे साहित्य समीक्षा करने, पूर्ववर्ती अध्ययनों को समझने और शोध विषय से संबंधित स्रोतों की पहचान करने में सुविधा होती है। अनुसंधान की गुणवत्ता काफी हद तक उपलब्ध सूचना की व्यापकता और विश्वसनीयता पर निर्भर करती है। NDLI के माध्यम से अनेक संस्थानों के संसाधनों को खोजने की सुविधा मिलने से शोधार्थी विभिन्न स्रोतों की तुलना कर सकता है। इससे अंतर्विषयक शोध को भी प्रोत्साहन मिलता है। NDLI का उद्देश्य शोध, नवाचार और ज्ञान-विकास को समर्थन प्रदान करना भी है।

प्रतियोगी परीक्षाओं में उपयोगिता

भारत में बड़ी संख्या में विद्यार्थी विभिन्न प्रवेश एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। NDLI इस वर्ग के लिए भी उपयोगी डिजिटल संसाधन उपलब्ध कराता है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार NDLI में स्कूल एवं कॉलेज विद्यार्थियों तथा नौकरी की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों के लिए परीक्षा-तैयारी संबंधी सेवाएँ उपलब्ध हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थी विभिन्न विषयों की अध्ययन सामग्री, प्रश्न-पत्र तथा अन्य उपयोगी संसाधनों को खोज सकते हैं। इससे विशेष रूप से उन विद्यार्थियों को लाभ हो सकता है जिन्हें महंगी कोचिंग सामग्री या बड़ी निजी लाइब्रेरी तक आसानी से पहुँच उपलब्ध नहीं है।

ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों के लिए उपयोगिता

भारत में शिक्षा-संसाधनों की उपलब्धता सभी क्षेत्रों में समान नहीं है। महानगरों और बड़े शहरों में विद्यार्थियों को पुस्तकालय, कोचिंग संस्थान तथा विभिन्न शैक्षणिक संसाधन अपेक्षाकृत आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं, जबकि ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में ऐसी सुविधाएँ सीमित हो सकती हैं। डिजिटल पुस्तकालय इस अंतर को कम करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है। NDLI की डिजिटल प्रकृति के कारण राज्य या क्षेत्र की भौतिक सीमाएँ इसके उपयोग में प्रमुख बाधा नहीं बनतीं। भारत सरकार ने भी इसे ऐसा मंच बताया है जो विभिन्न राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के उपयोगकर्ताओं को डिजिटल संसाधनों तक पहुँच प्रदान करता है। इस प्रकार यदि किसी ग्रामीण विद्यार्थी के पास स्मार्टफोन या कंप्यूटर और इंटरनेट की सुविधा है, तो वह भी देश के विभिन्न संस्थानों से उपलब्ध अध्ययन सामग्री खोज सकता है। इससे शिक्षा के क्षेत्र में **डिजिटल समावेशन** को बढ़ावा मिल सकता है।

बहुभाषिकता और भारतीय भाषाओं का महत्व

भारत भाषाई विविधता वाला देश है। इसलिए डिजिटल ज्ञान संसाधनों की उपयोगिता तभी व्यापक हो सकती है जब उपयोगकर्ताओं को अपनी पसंद की भाषा में खोज एवं सामग्री तक पहुँच की सुविधा मिले। NDLI का वेब पोर्टल हिंदी सहित कई भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। आधिकारिक पोर्टल पर अंग्रेजी, हिंदी, बंगाली, तेलुगु, मराठी, तमिल, कन्नड़, गुजराती, मलयालम, ओड़िया और असमिया जैसी भाषाओं के इंटरफेस का उल्लेख है। बहुभाषिक सुविधा विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है जो अपनी शिक्षा भारतीय भाषाओं के माध्यम से प्राप्त करते हैं। इससे डिजिटल शिक्षा का विस्तार व्यापक सामाजिक समूहों तक किया जा सकता है तथा भाषा के कारण उत्पन्न डिजिटल दूरी को कम करने में सहायता मिलती है।

शिक्षकों के लिए उपयोगिता

NDLI केवल विद्यार्थियों के लिए ही नहीं, बल्कि शिक्षकों के लिए भी उपयोगी है। शिक्षक अपनी कक्षा के विषयों से संबंधित अतिरिक्त पाठ्य सामग्री खोज सकते हैं। डिजिटल संसाधनों की सहायता से वे पारंपरिक व्याख्यान पद्धति के साथ वीडियो, ऑडियो, ई-पुस्तक और अन्य डिजिटल सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। इससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक संवादात्मक और संसाधन-समृद्ध बन सकती है। शिक्षक विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम से आगे की सामग्री उपलब्ध कराकर उनमें स्व-अध्ययन और स्वतंत्र चिंतन की आदत विकसित करने में सहायता कर सकते हैं।

Conclusion : भारत में **National Digital Library of India (NDLI)** की उपयोगिता का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि यह केवल डिजिटल पुस्तकों और दस्तावेजों का संग्रह नहीं, बल्कि शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार तथा ज्ञान के प्रसार के लिए एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय डिजिटल मंच है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रायोजित और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर द्वारा विकसित NDLI का उद्देश्य देश के विभिन्न ज्ञान-संसाधनों को एकीकृत करके विद्यार्थियों तथा अन्य शिक्षार्थियों को एकल-विंडो खोज सुविधा प्रदान करना है। इसका राष्ट्रीय स्तर पर शुभारंभ 19 जून 2018 को हुआ था। NDLI की सबसे महत्वपूर्ण उपयोगिता शिक्षा को अधिक **सुलभ, समावेशी और लचीला** बनाने में दिखाई देती है। पारंपरिक पुस्तकालयों में उपलब्ध संसाधन स्थान, समय और भौतिक सुविधाओं से सीमित हो सकते हैं, जबकि डिजिटल पुस्तकालय के माध्यम से उपयोगकर्ता इंटरनेट की सहायता से विभिन्न शैक्षणिक संसाधनों को कहीं से भी खोज सकता है। NDLI विद्यालय स्तर से लेकर उच्च शिक्षा, शोध तथा आजीवन अधिगम तक विभिन्न स्तरों के शिक्षार्थियों को ध्यान में रखकर विकसित किया गया है। इसके संसाधनों में ई-पुस्तकें, शोध-पत्र, शोध-प्रबंध, व्याख्यान, ऑडियो, वीडियो, प्रश्न-पत्र, सिमुलेशन तथा अन्य डिजिटल सामग्री शामिल हैं। उच्च शिक्षा एवं **शोध-अनुसंधान** के क्षेत्र में NDLI की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। शोधार्थियों को साहित्य समीक्षा, पूर्ववर्ती शोध के अध्ययन, संदर्भ सामग्री के संकलन तथा विभिन्न विषयों से संबंधित शोध-संसाधनों की खोज में इससे सहायता मिलती है। संस्थागत डिजिटल रिपॉजिटरी के माध्यम से शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों, रिपोर्टों और अन्य विद्वतापूर्ण सामग्री को संरक्षित तथा साझा करने की सुविधा भी डिजिटल ज्ञान-परिस्थितिकी को मजबूत करती है। NDLI का एक महत्वपूर्ण पक्ष **डिजिटल समानता और ज्ञान का लोकतंत्रीकरण** है। भारत जैसे विशाल और सामाजिक-आर्थिक तथा भौगोलिक विविधता वाले देश में प्रत्येक विद्यार्थी को समान पुस्तकालय सुविधाएँ उपलब्ध कराना चुनौतीपूर्ण है। डिजिटल माध्यम इस असमानता को कम करने की क्षमता रखता है। विशेष रूप से ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थी, यदि उनके पास आवश्यक डिजिटल उपकरण और इंटरनेट उपलब्ध हों, तो देश के विभिन्न संस्थानों से उपलब्ध अध्ययन-सामग्री तक पहुँच प्राप्त कर सकते हैं। इस दृष्टि से NDLI शैक्षणिक अवसरों को अधिक व्यापक बनाने में सहायक है। बहुभाषिकता भी NDLI की उपयोगिता को बढ़ाती है। इसके वेब पोर्टल पर हिंदी सहित अनेक भारतीय भाषाओं में उपयोग की सुविधा उपलब्ध है। इससे भारतीय भाषाओं में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के लिए डिजिटल संसाधनों तक पहुँच आसान होती है और डिजिटल शिक्षा को अधिक व्यापक सामाजिक आधार प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त NDLI **प्रतियोगी परीक्षाओं, स्व-अध्ययन और आजीवन अधिगम** के लिए भी उपयोगी है। आधुनिक समय में ज्ञान प्राप्ति केवल विद्यालय या विश्वविद्यालय तक सीमित नहीं है। व्यक्ति अपने व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत विकास के लिए जीवनभर नए ज्ञान और कौशल प्राप्त करता रहता है। NDLI की 24×7 एकीकृत डिजिटल ज्ञान-स्रोत की परिकल्पना इस आवश्यकता को पूरा करने की दिशा में महत्वपूर्ण है। हालाँकि, NDLI की पूर्ण उपयोगिता प्राप्त करने के लिए कुछ चुनौतियों का समाधान आवश्यक है। डिजिटल विभाजन, इंटरनेट की असमान उपलब्धता, डिजिटल साक्षरता की कमी, तकनीकी संसाधनों का अभाव, कॉपीराइट संबंधी सीमाएँ तथा डिजिटल सामग्री की गुणवत्ता और विश्वसनीयता जैसी समस्याएँ इसके प्रभावी उपयोग को प्रभावित कर सकती हैं।

Reference :

1. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। वार्षिक रिपोर्ट 2024–25। नई दिल्ली: भारत सरकार, 2025।

2. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। National Digital Library of India: Technology Enabled Learning / नई दिल्ली: भारत सरकार।

3. National Digital Library of India Project. National Digital Library of India: About Us / भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर, पश्चिम बंगाल।

4. National Digital Library of India Project. Vision & Mission. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर।

5. National Digital Library of India Project. Milestones: History of NDLI. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर।